समास

✳ परिभाषा : 'समास' शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है 'छोटा - रूप' । अतः जब दो या दो से अधिक शब्द (पद) अपने बीच की विभक्तियों का लोप कर जो छोटा रूप बनाते हैं , उसे समास , सामासिक शब्द या समस्त पद कहते हैं । जैसे - 'रसोई के लिए घर' शब्दों में से के लिए विभक्ति का लोप करने पर नया शब्द बना 'रसोई घर' , जो एक सामासिक शब्द है ।

✳ समास विग्रह :किसी समस्त पद या सामासिक शब्द को उसके विभिन्न पदों एवं विभक्ति सहित पृथक् करने की क्रिया को समास का विग्रह कहते हैं जैसे-

विद्यालय → विद्या के लिए आलय

माता - पिता → माता और पिता

✳ समास के प्रकार

समास छः प्रकार के होते हैं -

1 . अव्ययीभाव समास

2 . तत्पुरुष समास

3 . द्वन्द्व समास

4 . बहुब्रीहि समास

5 . द्विगु समास

6 . कर्म धारय समास

✺ 1 . अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव समास में प्रायः

(i) पहला पद प्रधान होता है ।

(ii) पहला पद या पूरा पद अव्यय होता है । (वे शब्द जो लिंग , वचन , कारक , काल के अनुसार नहीं बदलते , उन्हें अव्यय कहते हैं)

(iii) यदि एक शब्द की पुनरावृत्ति हो और दोनों शब्द मिलकर अव्यय की तरह प्रयुक्त हो , वहाँ भी अव्ययीभाव समास होता है ।

(iv) संस्कृत के उपसर्ग युक्त पद भी अव्ययीभव समास होते हैं

यथाशक्ति → शक्ति के अनुसार

यथाशीघ्र → जितना शीघ्र हो

यथाक्रम → क्रम के अनुसार

यथाविधि → विधि के अनुसार

यथावसर → अवसर के अनुसार

यथेच्छा → इच्छा के अनुसार

प्रतिदिन → प्रत्येक दिन / दिन - दिन / हर दिन

प्रत्येक → हर एक / एक - एक / प्रति एक

प्रत्यक्ष → अक्षि के आगे

घर - घर → प्रत्यक घर / हर घर / किसी भी घर का न छोड़कर

हाथों - हाथ → एक हाथ से दूसरे हाथ तक / हाथ ही हाथ में

रातों - रात → रात ही रात में

बीचों - बीच → ठीक बीच में

साफ - साफ → साफ के बाद साफ / बिल्कुल साफ

आमरण → मरने तक / मरणपर्यन्त

आसमुद्र → समुद्रपर्यन्त

भरपेट → पेट भरकर

अनुकूल → जैसा कूल है वैसा

यावज्जीवन → जीवनपर्यन्त

निर्विवाद → बिना विवाद के

दर असल → असल में

बाकायदा → कायदे के अनुसार

✺ 2 . तत्पुरुष समास

(i) तत्पुरुष समास में दूसरा पद (पर पद) प्रधान होता है अर्थात् विभक्ति का लिंग , वचन दूसरे पद के अनुसार होता है ।

(ii) इसका विग्रह करने पर कर्ता व सम्बोधन की विभक्तियों (ने , हे , ओ , अरे) के अतिरिक्त किसी भी कारक की विभक्ति प्रयुक्त होती है तथा विभक्तियों के अनुसार ही इसके उपभेद होते हैं । जैसे -

✯ (क) कर्म तत्पुरुष (को)

कृष्णार्पण → कृष्ण को अर्पण नेत्र

सुखद → नेत्रों को सुखद

वन - गमन → वन को गमन

जेब कतरा → जेब को कतरने वाला

प्राप्तोदक → उदक को प्राप्त

☆ (ख) करण तत्पुरुष (से / के द्वारा)

ईश्वर – प्रदत्त → ईश्वर से प्रदत्त

हस्तलिखित → हस्त (हाथ) से लिखित

तुलसीकृत → तुलसी द्वारा रचित

दयार्द्र → दया से आर्द्र

रत्न जड़ित → रत्नों से जड़ित

☆ (ग) सम्प्रदान तत्पुरुष (के लिए)

हवन - सामग्री → हवन के लिए सामग्री

विद्यालय → विद्या के लिए आलय

गुरु - दक्षिणा → गुरु के लिए दक्षिणा

बलि – पशु → बलि के लिए पशु

☆ (घ) अपादान तत्पुरुष (से पृथक)

ऋण मुक्त → ऋण से मुक्त

पदच्युत → पद से च्युत

मार्ग भ्रष्ट → मार्ग से भ्रष्ट

धर्म - विमुख → धर्म से विमुख

देश निकाला → देश से निकाला

☆ (च) सम्बन्ध तत्पुरुष (का , के , की)

मन्त्रिपरिषद् → मन्त्रियों की परिषद्

प्रेम - सागर → प्रेम का सागर

राजमाता → राजा की माता

अमचूर → आम का चूर्ण

रामचरित → राम का चरित

☆ (छ) अधिकरण तत्पुरुष (में , पे , पर)

वनवास → वन में वास

जीवदया → जीवों पर दया

ध्यान - मग्न → ध्यान में मग्न

घुडसवार → घोडे पर सवार

घृतान्न → घी में पक्का अन्न

कवि पुंगव → कवियों में श्रेष्ठ

✺ 3 . द्वन्द्व समास

(i) द्वन्द्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं ।

(ii) दोनों पद प्रायः एक दूसरे के विलोम होते हैं , सदैव नहीं ।

(iii) इसका विग्रह करने पर ' और ' , अथवा ' या ' का प्रयोग होता है ।

माता - पिता → माता और पिता

दाल - रोटी → दाल और रोटी

पाप - पुण्य → पाप या पुण्य / पाप और पुण्य

अन्न - जल → अन्न और जल

जलवायु → जल और वायु

फल - फूल → फल और फूल

भला - बुरा → भला या बुरा

रुपया - पैसा → रुपया और पैसा

अपना - पराया → अपना या पराया

नीललोहित → नीला और लोहित (लाल)

धर्माधर्म → धर्म या अधर्म

सुरासुर → सुर या असुर / सुर और असुर

शीतोष्ण → शीत या उष्ण

यशापयश→ यश या अपयश

शीतातप → शीत या आतप

शस्त्रास्त्र → शस्त्र और अस्त्र

कृष्णार्जुन → कृष्ण और अर्जुन

✺ 4 . बहुब्रीहि समास

(i) बहुव्रीहि समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता ।

(ii) इसमें प्रयुक्त पदों के सामान्य अर्थ की अपेक्षा अन्य अर्थ की प्रधानता रहती है ।

(iii) इसका विग्रह करने पर ' वाला , है , जो , जिसका , जिसकी , जिसके , वह आदि आते हैं ।

गजानन → गज का आनन है जिसका वह (गणेश)

त्रिनेत्र → तीन नेत्र हैं जिसके वह (शिव)

चतुर्भुज → चार भुजाएँ हैं जिसकी वह (विष्णु)

षडानन → षट् (छः) आनन हैं जिसके वह (कार्तिकेय)

दशानन → दश आनन हैं जिसके वह (रावण)

घनश्याम → घन जैसा श्याम है जो वह (कृष्ण)

पीताम्बर → पीत अम्बर हैं जिसके वह (विष्णु)

चन्द्रचूड़ → चन्द्र चूड़ पर है जिसके वह

गिरिधर → गिरि को धारण करने वाला है जो वह

मुरारि → मुर का अरि है जो वह

आशुतोष → आशु (शीघ्र) प्रसन्न होता है जो वह

नीललोहित → नीला है लहू जिसका वह

वज्रपाणि → वज्र है पाणि में जिसके वह

सुग्रीव → सुन्दर है ग्रीवा जिसकी वह

मधुसूदन → मधु को मारने वाला है जो वह

आजानुबाहु → जानुओं (घुटनों) तक बाहुएँ हैं जिसकी वह

नीलकण्ठ → नीला कण्ठ है जिसका वह

महादेव → देवताओं में महान् है जो वह

मयूरवाहन → मयूर है वाहन जिसका वह

कमलनयन → कमल के समान नयन हैं जिसके वह

कनकटा → कटे हुए कान है जिसके वह

जलज → जल में जन्मने वाला है जो वह (कमल)

वाल्मीकि → वल्मीक से उत्पन्न है जो वह

दिगम्बर → दिशाएँ ही हैं जिसका अम्बर ऐसा वह

कुशाग्रबुद्धि → कुश के अग्रभाग के समान बुद्धि है जिसकी वह

मन्द बुद्धि → मन्द है बुद्धि जिसकी वह

जितेन्द्रिय → जीत ली हैं इन्द्रियाँ जिसने वह

चन्द्रमुखी → चन्द्रमा के समान मुखवाली है जो वह

अष्टाध्यायी → अष्ट अध्यायों की पुस्तक है जो वह

✺ 5 . द्विगु समास

(i) द्विगु समास में प्रायः पूर्वपद संख्यावाचक होता है तो कभी - कभी परपद भी संख्यावाचक देखा जा सकता है ।

(ii) द्विगु समास में प्रयुक्त संख्या किसी समूह का बोध कराती है अन्य अर्थ का नहीं , जैसा कि बहुव्रीहि समास में देखा है ।

(iii) इसका विग्रह करने पर समूह ' या ' समाहार ' शब्द प्रयुक्त होता है ।

दोराहा → दो राहों का समाहार

पक्षद्वय → दो पक्षों का समूह

सम्पादक द्वय → दो सम्पादकों का समूह

त्रिभुज → तीन भुजाओं का समाहार

त्रिलोक या त्रिलोकी → तीन लोकों का समाहार

त्रिरत्न → तीन रत्नों का समूह

संकलन - त्रय → तीन का समाहार

भुवन – त्रय → तीन भुवनों का समाहार

चौमासा / चतुर्मास → चार मासों का समाहार

चतुर्भुज → चार भुजाओं का समाहार (रेखीय आकृति)

चतुर्वर्ण → चार वर्णों का समाहार

पंचामृत → पाँच अमृतों का समाहार

पंचपात्र → पाँच पात्रों का समाहार

पंचवटी → पाँच वटों का समाहार

षड्भुज → षट् (छः) भुजाओं का समाहार

सप्ताह → सप्त अहों (सात दिनों) का समाहार

सतसई → सात सौ का समाहार

सप्तशती → सप्त शतकों का समाहार

सप्तर्षि → सात ऋषियों का समूह

अष्ट सिद्धि → आठ सिद्धियों का समाहार

नवरत्न → नौ रत्नों का समूह

नवरात्र → नौ रात्रियों का समाहार

दशक → दश का समाहार

शतक → सौ का समाहार

शताब्दी → शत (सी) अब्दों (वर्षों) का समाहार

✺ 6 . कर्मधारय समास

(i) कर्मधारय समास में एक पद विशेषण होता है तो दूसरा पद विशेष्य ।

(ii) इसमें कहीं कहीं उपमेय उपमान का सम्बन्ध होता है तथा विग्रह करने पर ‘ रूपी ’ शब्द प्रयुक्त होता है -

पुरुषोत्तम → पुरुष जो उत्तम

नीलकमल → नीला जो कमल

महापुरुष → महान् है जो पुरुष

घनश्याम → घन जैसा श्याम

पीताम्बर → पीत है जो अम्बर

महर्षि → महान् है जो ऋषि

नराधम → अधम है जो नर

अधमरा → आधा है जो मरा

रक्ताम्बर → रक्त के रंग का (लाल) जो अम्बर

कुमति → कुत्सित जो मति

कुपुत्र → कुत्सित जो पुत्र

दुष्कर्म → दूषित है जो कर्म

चरम सीमा → चरम है जो सीमा

लाल मिर्च → लाल है जो मिर्च

कृष्ण - पक्ष → कृष्ण (काला) है जो पक्ष

मन्द - बुद्धि → मन्द जो बुद्धि

शुभागमन → शुभ है जो आगमन

नीलोत्पल → नीला है जो उत्पल

मृग नयन → मृग के समान नयन

चन्द्र मुख → चन्द्र जैसा मुख

राजर्षि → जो राजा भी है और ऋषि भी

नरसिंह → जो नर भी है और सिंह भी

मुख – चन्द्र → मुख रूपी चन्द्रमा

वचनामृत → वचनरूपी अमृत

भव - सागर → भव रूपी सागर

चरण - कमल → चरण रूपी कमल

क्रोधाग्नि → क्रोध रूपी अग्नि

चरणारविन्द → चरण रूपी अरविन्द

विद्या - धन → विद्यारूपी धन

नोट : यह पीडीएँफ़ विभिन्न स्रोतों से तथ्य एकत्रित कर बनायीं गयी है | यदि इसमें कोई त्रुटी पायी जाती है तो नॉलेज हब संचालक की जिम्मेदारी नहीं होगी |

Join Telegram Channel Like Facebook Page

WWW.KNOWLEDGEKAHUB.COM